

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani

RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12, अंक-42, जुलाई - सितम्बर 2022

75

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

नागफनी

मूल्य

₹ 150/-

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

नागफनी

वर्ष-12 अंक 42, जुलाई -सितंबर 2022

अनुक्रम

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय

पाठकों की प्रतिक्रिया

साहित्यिक विमर्श

1. जिंदगी 50-50 उपन्यास की 'हर्षिता' का जीवन-संघर्ष-डॉ. पी. सरस्वती	05
2. प्रयोगधर्मी उपन्यासकार-अज्ञेय-डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	06
3. भोजपुरी फिल्म और प्रयुक्त हिन्दी लोकगीत का स्वरूप एवं सम्भावनाएँ -डॉ. शिवम् चतुर्वेदी	7-8
4. भारतीय नवजागरण और आधुनिक हिन्दी साहित्य: भारतेंदु एवं प्रसाद की नाट्य रचनाओं के संदर्भ में- डॉ. बालेन्द्र सिंह यादव	9-10
5. राही मासूम रजा के उपन्यासों में अभिव्यक्त गंगा जमुनी संस्कृति-डॉ. गणेश एम.	10-12
6. हिंदी कन्नड़ और कन्नड़-हिंदी अनुवाद: परंपरा और पद्धति-डॉ. साहिराबानु बी. बोरगल	13-15
7. मंगलेश डबराल की कविताओं में सामाजिक यथार्थ-डॉ. सुनील एम. पाटिल	16
8. महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी सशक्तिकरण की पहल-डॉ. राजन तनवर	17-18
9. डिजिटल मीडिया में हिन्दी की वर्तमान स्थिति-डॉ. विनय कुमार चौधरी	18-19
10. नागार्जुन के उपन्यासों में नारी विमर्श-वीणा शर्मा/डॉ. शिवम् चतुर्वेदी	20
11. सुरजीत पातर की कविताओं में बदलते नैतिक मूल्य एवं सत्ता पर व्यंग्य-डॉ. सुरजीत सिंह वरवाल	21-22
12. पुणतांबेकर का व्यंग्य: व्यापक तथ्यों की सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ-डॉ. मीना सुतवणी	23-25
13. 'फैटसी' के शिल्पकार-कवि गजानन माधव मुक्तिबोध-डॉ. एन. पी. प्रजापति	25-27
14. 'तहबील' की कहानियों में सामाजिक जीवन मूल्य-डॉ. आर्या वी. एस.	27-29
15. स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्य निबंध साहित्य: राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में -डॉ. सचिन कदम/गणेश गभाले	29-31
16. शोध-प्रकार और समीक्षा-डॉ. समय लाल प्रजापति	31-32
17. वृद्धावस्था की त्रासदी और 'नट सम्राट'-प्रो. संजय एल. मादार	33-34
18. 'पंचलाइट': एक पुनर्पाठ-डॉ. निम्मी ए. ए.	34-35
19. आदिकाल में नाथ सम्प्रदाय: महत्व एवं योगदान-रीना रानी	35-36
20. कल्चर-वल्चर उपन्यास: साहित्य, राजनीति एवं व्यवसाय की यथार्थ परिकल्पना-रेणु देवी	37-38
21. हिन्दी की कहानियों में चित्रित प्रव्रजन की समस्या-डॉ. मनिका शङ्कीया	39
22. मानवीय मूल्यों के सृजनहार: प्रेमचंद-चेतन चंद जोशी	40-41
23. 'कोसला': कथ्य और शिल्प के नए प्रयोग-डॉ. सुषमा कुमारी	42-43
24. साहित्य: एक सामाजिक उत्पादन-डॉ. सरिता सिन्हा	43-45
25. समकालीन मलयालम कविता-अश्वती एस	46-48
26. धार्मिक उन्माद का चित्रण: त्रिशूल-किरण मिश्रा	48-49
27. अज्ञेय जी के कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना-प्रार्थना गोगोई	50-51
28. 'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में अन्तिम जन का प्रतिरोध- शिवम कुमार	52-53
29. गुरु जम्भवाणी में निहित चेतना-किरण मयी	54-55
30. हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श-जितेन्द्र कुमार	56-57
31. आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका विकास-अनिल कुमार मेरावी	58-60
32. माधव कौशिक की गजलों में काव्य भाषा-हरी राम	60-62
33. तेलुगू भाषा आविर्भाव, विकास और संस्कृति-डॉ. आर. एन. शीला	62-63
34. अभिमान्यु अनंत कृत 'अपना मन उपवन' उपन्यास में पर्यावरणीय विमर्श-जयन्ती/डॉ. रामरति	64-65
35. भगवानदास मोरवाल के कथा साहित्य में मानवाधिकार -अजय जी कम्मत	65-97
36. 'शिक्षा शेरनी का दूध है' इस संकल्पना को दर्शाता 'छप्पर' उपन्यास-सिलपाका वेंकटारि	68-69
स्त्री विमर्श	69-71
1. असम में नारी शिक्षा: एक अवलोकन-प्रशांत लस्कर	72-73
2. दलित महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण-रीता भारती/डॉ. कमलेश कुमार सिंह	74-45
3. हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक नारीवाद-अन्वेषा कबिरत्ना	76-78
4. भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में स्त्री-संसार-सुबाष	78-79
5. स्त्री शिक्षा-सुमलक अप्पु/डॉ. शिवम् चतुर्वेदी	80-81
6. समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री दृष्टि- रेखा शर्मा/डॉ. रजिया बेगम	81-82
दलित विमर्श	83-84
1. दलित आलोचना के प्रमुख मुद्दे: एक संक्षिप्त विश्लेषण- डॉ. जयसिंह मीणा	85-86
2. मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में दलित संघर्ष ('हमारा जवाब' कहानी संग्रह के विशेष सन्दर्भ में)-शिल्पा दत्त	87-88
3. हिंदी साहित्य में दलित चेतना-वैशाली काशिनाथ गायकवाड	89-90
4. दलित शब्द का अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणाएँ-भूप सिंह/डॉ. जोगीराम	90-91
6. जातिवादी राजनीति का पोल खोलता प्रेमकुमार 'मणि' का उपन्यास 'ढलान'-डॉ. जे. आत्माराम	92-94

हिन्दी की कहानियों में चित्रित प्रव्रजन की समस्या

डॉ. मनिषा शङ्कीया

सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग
नगांव गर्ल्स कॉलेज, असम

प्रस्तावना -

अपना जन्मस्थान त्याग करके किसी विपरीत परिस्थिति में जब कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह अन्य एक सम्पूर्ण अपरिचित वातावरण, अपरिचित समाज में प्रवेश करता है, ऐसी परिस्थिति में उन लोगों की शंकाओं का निराकरण करने का प्रयास समय समय पर राजनीतिक, सामाजिक रूप से किया जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में घटित हर छोटी-बड़ी घटनाओं का प्रतिफलन साहित्य में साहित्यकार बड़े ही ईमानदारी पूर्वक करते हैं। प्रव्रजन जब हद पार करके लक्ष्यस्थल अंचल की जातीय सत्त्वा, संस्कृति के साथ-साथ राजनीतिक संकट बनने लगता है, जन वैचित्र्य के लिए भी संकट लाने लगता है, उस समय प्रव्रजन समस्या बन जाता है और तभी प्रव्रजन की समस्या-समाधानार्थ पथ का संधान करना पड़ता है। साहित्यकारों ने भी संवेदनात्मक दृष्टिकोण से प्रव्रजकों की मानसिक अवस्था को झाँककर देखने का प्रयास किया है। झुम्पा लाहिड़ी का उपन्यास *The Namesake*, असम के प्रसिद्ध औपन्यासिक रीता चौधरी के उपन्यास 'एइ समय सेइ समय', 'माकाम', उमाकांत शर्मा का उपन्यास 'एजाक मानह एखन अरण्य', बांग्ला कहानी डांगार दाग, अंगपालि, उद्वास्तु, अमिताभ घोष का उपन्यास *The Hungry Tide*, खालेद हुसैनी का उपन्यास *The Kite Runner*, हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार मोहन राकेश, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, बलवंत सिंह, कृशान चन्दर की रचनाओं में प्रव्रजन से उत्पन्न समस्याओं को उठाकर मानवीय धरातल पर उसे संवेदनात्मक दृष्टि से समझने के प्रयास किये गये हैं। प्रव्रजित व्यक्तियों के जीवन, उनका मनोजगत विश्लेषण करने पर देखा जाता है कि अपने देश की वायु, मिट्टी, पानी, रस से परिपुष्ट होते रहने के बीच में ही अचानक किसी विपर्यय के कारण दूसरे देश के अनजान लोगों के बीच जाकर नया संग्राम आरंभ करने को विवश होते हैं। ऐसी अवस्था में अधिकांश समय ही इन लोगों को संदेह की दृष्टि से ही देखा जाता है। इसके साथ ही इन लोगों को मौलिक अधिकार प्राप्ति के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है।

विषय प्रवेश -

अनादि काल से चलती आ रही स्वाभाविक प्रक्रिया प्रव्रजन ही वर्तमान समय में गुरुत्व के साथ अध्ययन का विषय बन गया है। प्रव्रजन अधिकार है या अपराध - इस संदर्भ में *The Reluctant Fundamentalist* के लेखक महचिन हामिद ने *The Guardian* में लिखा है - "मैं प्रव्रजन को एक मानव अधिकार के रूप में विश्वास करता हूँ। मत प्रकाश का अधिकार या जाति, धर्म, लिंग या यौन वैषम्य विरोधी अधिकार की तरह ही यह अधिकार है।" इन्होंने और लिखा है - "हम सबलोग ऐतिहासिक रूप से प्रव्रजनकारी हैं। हमारे पूर्वज अन्य किसी स्थान से प्रव्रजित हुए हैं। अनागत दिनों में जलवायु परिवर्तन, रोग, राष्ट्र की व्यर्थता, युद्ध आदि के कारण लाख-लाख यहाँ तक कि कड़ोरो की संख्या में लोग एक देश छोड़कर दूसरे देश में आश्रय लेने को बाध्य होंगे कि पूर्व की सभी परिसंख्या ही म्लान हो जाएंगे।" प्रसिद्ध साहित्यकार मोहन राकेश कृत बहु-चर्चित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में महाकवि कालिदास को उनकी प्रेमिका मल्लिका उज्जयिनी जाने का परामर्श देती है, तब कालिदास ने अपनी आशंका इस प्रकार व्यक्त करते हैं - "यहाँ से जाकर मैं अपनी भूमि से उखड़ जाऊंगा।" भ्रंश करते हैं - "नयी भूमि सुखा भी तो हो सकती है।" इस प्रसंग का उत्थापन इसलिए किया गया कि नयी भूमिखंड में प्रव्रजन करनेवालों को किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा अथवा उस जगह के पूर्व निवासी उन लोगों को किस रूप में ग्रहण करेंगे, इस विषय में संदेह रहने के बावजूद भी जोखिम उठाकर प्रव्रजन करने को तैयार हो जाते हैं। प्रव्रजन से सम्बन्धित ऐसी कथा, व्यथा को शब्दबद्ध करने का प्रयास हिन्दी के कथाकारों ने समय-समय पर किया है। 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में कहानीकार मोहन राकेश ने भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय भारत में

आनेवाला एक परिवार की दुख-दर्दशा का वर्णन किया गया है। कहानी में 'कुत्ता' शब्द प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग किया गया है। कुत्ता तभी भौकता है, जब वह अस्वाभाविक परिस्थिति में पड़ता है। आलौच्य कहानी में भी नायक ने स्वयं को 'परमात्मा का भेजा हुआ कुत्ता' कहता है। एक ओर अपना देश छोड़ने की वेदना और दूसरी ओर विदेश में सरकारी पक्ष द्वारा वंचना का बलि होकर हाहाकार करनेवाले लोगों की व्यथा। कार्यालय में बाबुओं के पीछे घुमते-घुमते यहाँ तक कि वह अपना नाम, परिचय भी खो देता है। कहानी के अंततक अत्यंत जिद्दी नायक को उसका अधिकार मिल ही जाता है। किन्तु समाज के कितने लोग इस प्रकार अपना अधिकार लेने को सक्षम है, यह प्रश्न का विषय है। सम्पूर्ण कहानी में अत्यंत संवेदनशील संवाद है - "एक तुम्हीं नहीं, यहाँ तुम सबके सब कुत्ते हो... तुम सब भी कुत्ते हो, और मैं भी कुत्ता हूँ। फर्क सिर्फ इतना है कि तुमलोग सरकार के कुत्ते - हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौकते हो। मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ ... तुम पर भौकना मेरा फर्ज है, मेरे मालिक का फरमान है।" 5

कहानीकार निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' कहानी का नायक मुकजी एक डाक्टर है। वार्मा में जपानियों द्वारा आक्रमण करते समय वह आकर एक छोटा-सा पहाड़ी शहर में रहने लगता है। हालांकि जीवन का अधिकांश समय पहाड़ी शहर में व्यतीत करने के बावजूद भी अपी मातृभूमि को भूल नहीं पाता है। 'आधा वार्मिज' इस डाक्टर ने आने की रास्ते में ही पत्नी को खोया। ह्यूबर्ट नामक परोसी के सामने अपनी व्यथा को व्यक्त करके जब वह कहता है - "मैं कभी-कभी सोचता हूँ, इंसान जिंदा किसलिए रहता है - क्या उसे कोई और बेहतर काम करने को नहीं मिला? हजारों मील अपने मूलक से दूर यहाँ मैं पड़ा हूँ - यहाँ कौन मुझे जानता है ... यही शायद मर भी जाऊँगा। ह्यूबर्ट, क्या तुमने कभी महसूस किया है कि एक अजनबी की हैसियत से परीची जमीन पर मर जाना काफी खौफनाक बात है ...!" 6

मुकजी, जिसका वार्मिज होने का एक मात्र चिह्न अब उसका पिचका हुआ नाक और चंचल आँखों में ही मात्र शेष है, वह भी मन में एक आशा पाल रहा है - मृत्यु के पूर्व एकबार वार्मा अवश्य जायेगा वह कहता है - "कुछ भी कह लो, अपने देश का सुख कहीं नहीं मिलता। यहाँ तुम चाहे कितने वर्ष रह लो, अपने को हमेशा अजनबी ही पाओगे।" 7

रजिया सज्जाद जहीर द्वारा लिखित 'नमक' कहानी की सिख महिला जब पाकिस्तान में रहनेवाले भाइयों से कुछ दिनों के लिए मिलने जानेवाली सफिया से लाहौरी नमक माँगवाती है, तब इस छोटी सी कथा हमें बहुत सी बातें सोचने को मजबूर कर देती है। यह कहानी सरहद के दोनों तरफ के विस्थापित लोगों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। विभाजन के समय परिस्थितिवाश सिख बीबी परिवार सहित भले ही पाकिस्तान छोड़कर भारत आ जाती है, फिर भी वह आज भी लाहौर को ही अपना वतन मानती है। एक जगह पर वह कहानी की नायिका सफिया को कस्टम अधिकारी के द्वारा कहलवाती है - "जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा और उन खातून को यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।" 8 कितना भी सुरक्षित अथवा मनोकूल परिवेश में व्यक्ति क्यों न रहे, प्रव्रजनकारी हमेशा निज मातृभूमि का कोमल स्पर्श, अपनापन भूल नहीं सकता है और पराये देश में हमेशा असुरक्षित अनुभव करता है। मोहन राकेश कृत अन्य एक कहानी 'मलबे का मालिक' में भी कुछ ऐसा ही भावदेखने को मिलता है। भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय जो भीषण साम्प्रदायिक संघर्ष हुआ था, उसी समय गनी मियां अमृतसर छोड़कर लाहौर गया हुआ था।

उसका बेटा, बहु अमृतसर में ही रह गया, परोसियों के भरोसे। किन्तु धर्मीय उन्माद से परिचालित लोगों के हाथों उनकी मृत्यु हुई। अपने खून-पसीने से सजाया घर को भी दण्डितकारियों ने जला दी। देश का विभाजन हुआ। धीरे-धीरे दोनों देशों में शांति आयी। आठ वर्ष बाद सीमावर्ती राज्यों में प्रीति बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित हॉकी मैच देखने के बहाने लाहौर से मुसलमानों की एक टोली अमृतसर आती है। दरअसल वे लोग अपने जन्मस्थल की मोह में बंदी होकर ही यहाँ आये हैं। प्रत्येक व्यक्ति घुम-घुमकर तलाश रहा है अपना घर, अपनी मिट्टी – जिसे वे छोड़ गये थे। कहानी का मूल वक्तव्य यही है कि कठिन परिस्थिति में प्रताड़ित होकर किसी को प्रव्रजन करना भी पड़े, अपनी भूमि, अपने लोग सदा ही अपने रहते हैं।

निष्कर्ष :-

प्रव्रजित व्यक्ति दोहरी समस्याओं से घिरते रहते हैं। एक तो वे अपना घर, अपने समाज, इष्ट-कुतुम्ब से दूर रहने का मनोकष्ट से ग्रसित रहते हैं, तो दूसरी ओर परदेश की भूमि में रहेकर हमेशा अनिश्चित भविष्य की चिंता से पीड़ित रहते हैं। प्रव्रजन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि विभिन्न समस्याओं की सृष्टि तो करता है, किन्तु इतना होते हुए भी उन लोगों की मानसिक अवस्था को भी टटोलने का प्रयास अवश्य ही होना चाहिए। उनको मौलिक अधिकारों से कम से कम वंचित न किया जाय, इस पर ध्यान रखना मानवीय दृष्टि से उचित होगा।

संदर्भ संकेत :-

1. The Guardian , असमीया विकिपीडिया
2. वही
3. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश, पृष्ठ 45
4. वही
5. परमात्मा का कुत्ता – मोहन राकेश (हिन्दी समय से साभार)
6. परिन्दे- निर्मल वर्मा (श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ), पृष्ठ 68
7. वही
8. नमक – रजिया सज्जाद जहरी

सहायक ग्रंथ/पत्रिका:-

1. तिवारी शेखर, बालेन्दु – नागर कथाएँ
2. राकेश म. इन. आषाढ़ का एक दिन
3. वर्मा, निर्मल, श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ
4. साहित्य प्रभा. सम्पादक – चन्द्र सिंह तोमर
5. हिन्दी समय

मुंशी प्रेमचंद जी के अनमोल विचार

"कुल की प्रतिष्ठा भी विनम्रता और सदव्यवहार से होती है, हेकड़ी और रुआब दिखाने से नहीं।" ~ मुंशी प्रेमचंद

"चापलूसी का ज़हरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझ कर पी न जाएँ।" ~ मुंशी प्रेमचंद

"मन एक भीरु शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है।" ~ मुंशी प्रेमचंद

मानवीय मूल्यों के सृजनहार: प्रेमचंद

चेतन चंद्र जोशी

सहायक प्राध्यापक हिंदी, गेस्ट (राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुनस्यारी, पिथौरागढ़, उत्तराखंड-262554)
मो.9412092340.9690996935

कथा समारट मुंशी प्रेमचंद अपनी साहित्यिक रचनाओं से यथार्थ की धरा में आदर्श के बीज रोपित कर भवष्य की संभवनाओं को तराशते हैं। यह आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके संपूर्ण रचनाकर्म का बहीखाता है जिसमें मानवीय मूल्यों का सृजन बड़ी बारीकी के साथ किया गया है। कथा समारट की कहानियाँ समाजिक संवेदनाओं के उस धरातल पर अपनी लीक कायम करती हैं जहाँ कोई दूसरा रचनाकार शायद ही पहुँच पाये। सामाजिक विसंगतियों के उन बड़ी चट्टानों को प्रेमचंद जिस सहजता के साथ चकनाचूर करते हैं वैसी कला किसी दूसरे कहानीकार में शायद ही देखने को मिले। आदर्श और यथार्थ का यह मिश्रित समन्वय हर वर्ग के पाठकों को लुभाता है। समाज में मौजूद विद्रुपताएँ हमारे ही द्वारा जनी गई होती हैं जो तत्समय हमें दिखाई नहीं देतीं लेकिन अंततः जब हम उस विद्रुपता का शिकार बनते हैं तब हमें उसके दर्द का अंदाजा होता है। मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित लगभग 300 कहानियों में अधिकांश कहानियाँ इन्हीं विद्रुपताओं पर केंद्रित हैं जो जाने-अनजाने हर किसी से होती हैं या हर कोई उसका शिकार होता है। समाज में मौजूद मान-सम्मान, आदर-अनादर, यश-अपयश सब कुछ धन और स्वार्थ के अधीन हो चुके हैं और यह अधीनता प्रेमचंद की कहानियों में साफ तौर पर झलकती है, जिसे वे अपने सांचे में ढाल समाज के लिए एक नई तालीम पेश करते हैं। प्रेमचंद की कहानियों के बारे में हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी अपनी चर्चित आलोचनात्मक पुस्तक 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' पुस्तक में लिखते हैं- "प्रेमचंद ने घटना, कथानक, चरित्र और संवेदन सभी को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी हैं। स्पष्ट ही कहानी रचना के ये उत्तरोत्तर सूक्ष्म होते स्तर हैं। 'पंच परमेश्वर' से 'कफन' तक की यात्रा में ये सभी स्तर कभी अलग-अलग और कभी एक दूसरे से लगे-लिपटे मिलेंगे। उनकी 'ईदगाह', 'मंत्र', 'पूस की रात' और 'कफन' जैसी अनेक कहानियाँ हैं जो किसी भी साहित्य के श्रेष्ठतम कहानियों से सहज तुलनीय हैं। मानव चरित्र के ऐसे आत्मीय अंकन विरल हैं जहाँ कि रचना संसार में हर पात्र यह अनुभव करे कि लेखक की सहानुभूति उसी के साथ है, वह चाहे 'मंत्र' का आदर्शप्रिय बूढ़ा भगत हो चाहे 'कफन' की तीखे यथार्थ में सने विद्रुप घीस और माधव हों। कथाकार की इस गहरी सहानुभूति के कारण ही ये चरित्र अपने-अपने संदर्भ में पूरे विश्वसनीय बन जाते हैं और एक गहरे मूल्य-बोध की सृष्टि करते हैं। रचना के इस स्तर पर कला और समाज-चेतना के कृत्रिम विभाजन आप से आप विलीन हो जाते हैं।"

मुंशी प्रेमचंद का कथा-संसार एक ऐसे साहित्य को गढ़ता है जिसकी तस्दीक आधी शताब्दी का समय गुजरने के बावजूद भी अपने आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद को पूरी तरह जीवंत किए हुए है। प्रेमचंद का भाषाई शिल्प इतना जीवट है कि सामान्य सी दैनंदिन घटना पर भी वह अपना विशेष प्रभाव अंकित कर जाती है। मशहूर समीक्षक गोपाल राय प्रेमचंद के भाषा शिल्प पर अपनी पुस्तक 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' में लिखते हैं-

"प्रेमचंद अपने कथासंसार को सजीव बनाने के लिए भाषा का बहुत सावधानी से प्रयोग करते हैं। शिक्षा-दीक्षा, आर्थिक-सामाजिक स्थिति या मनःस्थिति के अनुसार जिस पात्र को जैसी भाषा बोलनी चाहिए उससे वे वैसी ही भाषा का प्रयोग कराते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि प्रेमचंद के पात्र औसत गार्मीणों या नगरभाषियों की भाषा बोलते हैं। उपकरणों का सार्थक प्रयोग बिंब निर्माण की क्षमता आदि मिलकर एक अद्भुत प्रभाव पैदा कर देते हैं।" इस प्रकार सामाजिक विषमताओं के हर कौन को प्रेमचंद की भाषा बड़ी बारीकी से उसका आँकलन